Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विलक्षण वाणी

वि०
उ५

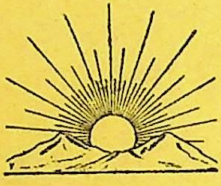

श्री स्वामी राममंगल दास
परमहंस देव जी महाराज
गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड
अयोध्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनन्त श्री १००८ श्री स्वामी

राम मंगल दास परमहंस देव जी

महाराज, गोकुल भवन, अयोध्या

के

साधन काल की झाँकी जिसमें उनकी रहनी दिव्य

संतों के दर्शन व मुखारविन्द द्वारा निकली

हुइ विलक्षण वाणी भक्तों के कल्याण

हेतु उनके कर कमलों में

सादर समर्पित

दो शब्द

श्री बाबा चालीदास जी अपढ़ थे, कुछ पढ़े नही थे। उनके मुख से जो निकलता था वह हमने थोड़ा लिखा है। हमारे अन्दर से बहुत जोर से आवाज होती है। वे कान के पास से बताते थे। भगवान की दया से इतना लिखाया। बहुत विस्तार से बताया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु महिमा को कहे,
अति ही ऊँच मुकाम ।
ताते गुरु पद के करूँ,
बार बार परनाम ।।

प्रथम संस्करण :
मंगलवार २७-२-७३.....१०००

द्वितीय संस्करण :
शुक्रवार ७-३-७५.....१०००

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री चालीदास जी मेहतर

ग्राम—कनवाखेरा

पो० व जिला—सीतापुर

जीवनी

श्री १०८ श्री चालीदास जी मेहतर, मुकाम कनवाखेरा, पोस्ट व जिला सीतापुर, सरायन नदी के पार जंगल में, सड़क के पूरब समाधि है। एक कोस से ज्यादा दक्षिण तरफ है। इनको शरीर त्याग किये ४८ वर्ष ९ माह हुए। इनके दर्शन को हम सीतापुर से बुधवार कार्तिक बदी ३-४ संवत २०२९ को सुबह साढ़े नौ बजे मोटर से गये थे। पुल टूट गया है, इसलिये मोटर सड़क पर छोड़ दी और हम लोग नाव पर गये और वापस आये। जाते समय एक ऊँची जगह पर उनके गुरु की समाधि पड़ती है, वहीं उनके एक चेले की भी है। वहाँ भी दो साधू मेहतर रहते हैं। वहाँ दो जगह कोठरी बनी हैं। फिर नदी पर ऊँचे पर एक सोनार का फार्म है। फार्म में एक बूढ़ा मुराऊ रहता है। रामकोट के जमींदारों से लिया है। उसी के बीच बाबा चालीदास की समाधि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनी है। एक कोठरी पक्की बनी है, किवाड़ लगे हैं। उसमें जाकर फेरी लगाया, कुछ देर खड़े रहे, फिर उनके चेले की समाधि पर फेरी लगाया। चाली जी के चेले का नाम मन्नीराम था।

वहाँ पर चार आदमी रहते हैं। एक आदमी आया, एक कुरसी लाया। उस पर बैठे। संग में उमाशंकर, अवधबिहारी, बृजबिहारी, बृजबिहारी का लड़का अरुन, जो मोटर चलाता था, संग में थे। सब लोग कुछ समय वहाँ रहे, फिर नदी पर आये। नाव से उतर कर बाबा के गुरु की समाधि पर फेरी लगा कर और कुछ देर रुक कर ११ बजे लोहार बाग घर पर आ गये। पहिले चाली का शरीर छूटा, उसके बाद उनके चेले का छूटा, फिर गुरु का छूटा, फिर चाली के गुरुभाई का छूटा।

बाबा चालीदास जंगल में नदी के किनारे पर रहते थे। जब बहुत बाढ़ आई तो सब के कहने से ऊँचे पर चले गये। शरीर छूटने के बाद जब समाधि बन गई, तब फिर बाढ़ आई। पाँच हाथ ऊँची दीवाल तक पानी चढ़ गया। कोठरी में भर गया। काफी ऊँचाई तक पानी पहुँच गया था। कई लोग पुराने हैं, वे पूछने पर बताते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाली बाबा एक छोटी डलिया में बताशे धरे बाँटा करते थे। वह चूकते नहीं थे। यह बात सब जानते थे और कुछ नहीं जानते थे।

चाली ने १८ की उम्र से २८ की उम्र तक फौज में नौकरी की। झाड़ू, बुहारू का काम था। सब खुश रहते थे। उनको वैराग्य हो गया। अपने आप भोजन एक बार बनाते थे। दोनों समय थोड़ा-थोड़ा खाते थे। ५ रुपये माहवार वेतन मिलता था। थोड़े में बसर करते, बाकी गरीबों को बाँट देते थे। काशी में राजा हरिश्चन्द्र के समय कलुवा भंगी था, उनके परिवार के थे। छोटे पर के सदाचारी थे। चारों धाम घूमे, फिर सीतापुर आये। महमूद शाह मेहतर, कनवा खेरा, नदी के किनारे झोपड़ी में स्त्री-पुरुष रहते थे। एक झोपड़ी में गाय रहती थी। उनसे कहा, "बाबा हमें भी कुछ बताओ"। वे बोले, "हम तो राम-राम करते हैं"। बस चाली जुट गये।

चालीदास जी नौकरी छोड़ कर जंगल के करीब रहने लगे। वहाँ बैठ गये और "राम-राम" करने लगे। पहिले दाहिनी आँख उठी तो कहा, "हम राम-राम नहीं छोड़ेंगे, आँख चाहे फूट जाय"। आँख थोड़े दिन में फूट गई। फिर बाईं आँख उठी तो चालीदास ने कहा, "यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी फूट जाय, हम राम-राम नहीं छोड़ेंगे"। वह भी फूट गई। फिर थोड़े दिन में चालीदास जी की दोनों हिय की आँखें खुल गईं। जब चाली ने डिप्टी कमिश्नर से कहा "एक शालिक राम जी मूर्ति मँगा दो", तब साहब ने किसी पंडित से कह कर मँगा दिया था। चालीदास उसका पूजन करते थे। तब डिप्टी कमिश्नर ने सड़क बनवा दी। रहने की जगह बन गई। बाजे टाँग दिये गये। भगवान के चित्र लगा दिये गये।

इतवार को हिन्दू, मुसलमान, अँग्रेज जाने लगे, चालीदास पहिले "सीता-राम" कहते थे, जो वहाँ आता था। एक बार थोड़ा खाते थे। चौदह साल "राम-राम" किया। एक दिन पंडित से कहा "आज शरीर छोड़ेंगे। हमें गीता सुना दो"। चाली बाहर बैठ गये। अर्जुनगीता सुन कर शरीर छोड़ दिया। चालीदास की समाधि बनी है। उनकी दशा विचित्र हो गई थी, जो वर्णन में नहीं आ सकती। जो कुछ थोड़ा हमें हाल में बताया गया है, वह हमने लिखा है। हमें उनकी बातों में ऐसी मस्ती आ गई कि आँसू चलने लगे। फिर वहाँ से आकर थोड़ा लिखा। बहुत विस्तार से बताया था।

हमारा हाल भी कुछ बताया। नाभाजी के समय का कुछ हाल बताया था। उन्होंने कहा "तुम्हारा काम हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया, तुम पाप-पुण्य से अलग हो गये"। मान-बड़ाई नरक की निशानी है। समय भी करीब आ गया है। जहाँ मान-बड़ाई है, वहाँ आ कर लोग समय बरबाद करते हैं। भजन, ध्यान, सुमिरन की यह बड़ी बाधा है। समय स्वाँस अनमोल पा कर खाली न छोड़ना चाहिए। समय आ कर फिर नहीं मिलता।

जहाँ उनकी समाधि है, उससे कुछ दूर "नज़र अली शाह" की समाधि है। बसंत को मेला लगता है। बहाँ भी एक हठयोगी छः हजार वर्ष के रहते हैं। हम सब बातें लिख नहीं सकते। थोड़ा लिखा है। कासिमपुर गाँव नदी पार है। वहाँ समाधि है और एक बाग है। हम १८ की उमर में वहाँ दो बार गये हैं।

श्री चालीदास जी का कीर्तन

दोहा—राम नाम सुमिरन करै पावै मुक्ति औ भक्ति।
चाली कह पासे सुलभ और कोई नहिं जुक्ति ॥१॥
नैन श्रवन जियतै खुलैं राम-सिया दरशाय।
चाली कह सुरमुनि मिलै सिर कर धरि लिपटाय ॥२॥
षट चक्कर चलने लगैं चाली कह भन्नाय।
कमल सातहू जाँय खिलि, स्वरन से महक उड़ाय ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नागिन जगि शुभ लोक सब तुमको देय धुमाय ।
चाली कह देखत बनै मुख से बोलि न जाय ॥४॥
अमृत घट में पान हो अनहद की हो तान ।
चाली कह सुनि मस्त हो रहै न तन का भान ॥५॥
ज्ञान-ध्यान-विज्ञान सब राम नाम के बीच ।
चाली कह सुमिरन करो छूटै भव की कीच ॥६॥
चौदह बरसै नाम जप तन मन प्रेम से कीन ।
चाली कह तब कृपानिधि पास आपने लीन ॥७॥
मेहतरि से बेहतरि भयो धन्य जानकीनाथ ।
चाली कह सुमिरन करो तब करि देय सनाथ ॥८॥
माया चोरन को लिए जाय बैठि गई दूरि ।
चाली कह सुमिरन करो बने हो कायर कूर ॥९॥
शान्ति दीनता लेव गहि आप को देय मिटाय ।
चाली कह मन होय बसि द्वैत भाव भगि जाय ॥१०॥
प्रेम भाव विश्वास अरु सत्य आय लिपटाय ।
चाली कह सो धन्य हैं नर-तन का फल पाय ॥११॥
आँख फूट दोनों गईं राम नाम नहिं छूट ।
चाली कह हिय की खुलीं कौन सकै अब लूट ॥१२॥
हर-हनुमति रक्षा करैं गदा त्रिशूल है हाथ ।
चाली कह सुमिरत रहत सिया सहित रघुनाथ ॥१३॥
परस्वारथ परमार्थ बिन नर तन बिरथा जान ।
चाली कह तन त्यागि कै नर्क को कीन पयान ॥१४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ पद—जल भोजन हल्का जब होवै ।
तन मन नाम से अपना नोवै ॥१॥
आलस नींद भागि जब जावै ।
तब आनन्द निज दिल में आवै ॥२॥
जो कछु देखै सुनै न भाषै ।
तब अनुभव की फरती साखै ॥३॥
चाली कहैं पहिल यह साधन ।
तब वह बचि जावै सब बाधन ॥४॥

दोहा—जब आज्ञा सिय राम की कहने की हूवै जाय ।
चाली कह तब ही कहै तब साधक बचि जाय ॥१५॥

वार्तिक—फिर कहने लगे नाम की महिमा बहुत अपार है, अकथ है, अलेख है, अगम है । शेष शारदा नहीं जान सकते । "राम जी" नाम का प्रभाव नहीं कह सकते, तब और देवी-देवता क्या कहैं । जो जितना देखा सुना है उतना कहा है । उसी तरह हम भी थोड़ा कहते हैं ।

सुनो—नाम से जो जो जाना सो लिखाते हैं । नाम से हिय की आँखें खुलीं, रूप की प्राप्ति, धुनि की, लय की, शून्य की, चारौं ध्यान की, चारौं अजपा की, पिपीलका मार्ग की, मीन मार्ग की, विहंग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मार्ग की, सुषमना की, अनहद बाजा की, अमृत पान की, कुण्डलिनी की, सब लोकन की, छइऊ चक्कर की, सातौं कमलन की, दोनों स्वरन से तरह तरह की महकन की, देवतन के घर खान-पान की, सब लोकों से तारों की सारी सृष्टि अपने शरीर में देखी, सारी सृष्टि में अपने शरीर को देखा अन्तर्ध्यान होना, काया प्रवेश होना, शरीर के चौदह भाग अलग-अलग करना, फिर एक में मिल जाना, सब रूप धारण करना, फिर अपने रूप में आ जाना।

तमाम हिन्दू सन्त और भाई नाम से अजर-अमर हैं, मुसलमान और उनकी पत्नी अजर-अमर हैं। जो जानते हैं, वे मानेंगे, कहाँ तक लिखावें।

दोहा—चाली कह चलना पड़ी होय हिसाब शुमार।
चित्रगुप्त सब लिखत हैं जो मन उठत विचार ॥१६॥
नर-तन की सब इन्द्रियाँ होवैं वहाँ गवाह।
शुभ करमन बैकुण्ठ दें अशुभ से नर्क अथाह ॥१७॥
धर्मराज बैठे वहाँ चित्रगुप्त के पास।
चाली कह उनको सबै गुन-अवगुन का भास ॥१८॥
सच्चा प्रभु दरबार है सच्चा है इन्साफ।
चाली कह सुमिरन करै सब हवै जावे माफ ॥१९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२ पद—सिया राम मोहिं गले लगा लो,
पास खड़े मुस्क्याते हो ॥१॥
नाम तुम्हार जपै तन मन से,
वाके हाथ बिकाते हो ॥२॥
हर दम वा पर सूरति राखत,
मुक्ति भक्ति के दाते हो ॥३॥
चाली अधम खड़ा कर जोड़े,
काहे देर लगाते हो ॥४॥

चाली की यह विनय सुन कर महाराज और महारानी जी ने चाली का एक-एक हाथ पकड़ कर बच्चों की तरह दुलराया और कहा, "हम तुम्हारे सामने हर समय रहेंगे और हर जगह तुम हमारे साथ रहोगे"। फिर चाली के सामने छटा-छबि सिंगार की अद्भुत झाँकी हो गई।

दोहा—ना जीने की खुशी है भक्तों, न मरने का डर है।
राम नाम जप के परताप से काम हमारा सर है ॥२०॥
निर्भय औ निर्बैर हमेशा, हर हनुमान का बर है।
चाली कहैं चलौ साकेतै, जो हमार निज घर है ॥२१॥

३ पद—नाम कि धुनि जो ररंकार है,
कर्म रेख पर मेखमार है ॥१॥
सब दिशि सुनिये एक तार है,
चाली कह सब सुख का सार है ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४ पद—धन्य वे नर नारि हैं जे प्रेम से सुमिरन किया ॥१॥
नाम धुनि परकाश लय औ सामने रघुवर सिया ॥२॥
देव मुनि जै जै करैं बरसैं सुमन हरषै हिया ॥३॥
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेत में बासा लिया ॥४॥

दोहा—कन कन में सिया राम हैं, कन कन में प्रिय श्याम ।
कन कन में कमला विष्णु हैं, चाली करे प्रनाम ॥२२॥
सबै पदारथ पास हैं बनि जावै जो घूर ।
राम नाम सुमिरन करै, यही सजीवनि मूर ॥२३॥
सन्मुख सीता राम हों, सुनै नाम का तूर ।
चाली कह सो भक्त है प्रेम में चकनाचूर ॥२४॥

वार्तिक—चाली की पहिली अवस्था में मन में विचार उठा कि क्या मुसलमान जो भजन करते हैं, भगवान के यहाँ अलग बैठारे जाते हैं या एक जगह । तो आकाशवाणी हुई और यह शेर सुनाई दी :—

शेर—फलक पर शोर यह बरपा
रसूलिल्लाह आवैंगे ।
मेरे चाली तेरे मन के सुखन
को हल करावैंगे ॥१॥

फिर 'मोहम्मद साहेब' आये, चाली को हृदय से लगाया और कहा "वहाँ जाति की जरूरत नहीं है । जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परमेश्वर का भजन करता है वह उनकी परम्परा में हो जाता है। भगवान उसे अपने हाथ से दिव्य वस्त्र पहना कर, सिर पर मुकुट लगा कर सिंहासन पर बैठाते हैं। सब एक ही जगह राखे जाते हैं। जो जैसा भजन किया है उस रीति से उसको सजावट सिंहासन मिलते हैं। वहाँ भी नम्बर लगे हैं, इतना फरक है। चाली की शंका दूर हो गई, चरनन पर पड़ गये। रसूल ने उठाकर उनके पेट व माथे की खाक अपने कपड़े से साफ किया, फिर सर पर हाथ फेरा और अन्तर्ध्यान हो गये। भगवान के अनेक नाम हैं। जो जिस नाम से उनको भजता है, उसी नाम से वे मिलते हैं।

दोहा—यह सृष्टि का खेल रचा ऐसा,
कोई आता कोई जाता है।
चाली कहैं हर दम ख्याल रहै,
सियाराम जगत पितु माता है ॥२२॥

५ पद—हिन्दू-मुसलमाँ सैकड़ों साकेतबासी हो गये ॥१॥
चाली कहैं हम ध्यान करि कै पहुँचि देखा हो गये ॥२॥
सुर मुनि की बानी सब सही हरि नाम बीजक
बो गये ॥३॥
तम मन लगा सुमिरन किया तब सब निवासी
हो गये ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६ पद—जियतै में सब प्राप्त भया सो जीवन-मुक्त
कहाता है ॥१॥
चाली कहैं तब वह भक्त भया हरि रूप रंग
बनि जाता है ॥२॥
परमानन्द उसे कहते वह दोनों दिसि
विख्याता है ॥३॥
सुर मुनि उसकी कीरति गावैं वह मुक्ति-भक्ति
का दाता है ॥४॥

वार्तिक—सातों समाधियों में से चार से गति होती है। लय समाधि, शून्य समाधि, प्रेम समाधि, सहज समाधि, पाँचवीं जड़ समाधि से आयु बढ़ती है, अजर-अमर हो जाता है पर भगवान की प्राप्ति नहीं होती है। तमाम सिद्धियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। भय समाधि व चोट समाधि में शरीर छूटने पर प्रेत योनि या नर्क होता है। यह ऋषियों के वाक्य हैं।

७ पद—चौबिस घंटा भीतरहि जनम मरन सब होय ॥१॥
चाली कह सुमिरन बिना पहुँचि सकत
नहिं कोय ॥२॥

वार्तिक—जप, पाठ, पूजन, कीर्तन, कथा, सेवा, धर्म सब सुमिरन के अन्दर हैं। जिसमें मन लग जाय उसी से पार हो जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८ पद—लखैं नैनन से सिया सरकार,
सुनैं श्रवनन से ररंकार ।।१।।
सुर मुनि सब बोलैं जै जै कार,
चाली कह जियतै भयो पार ।।२।।

९ पद—राम नाम की महिमा भक्तौं मामूली
कोइ जानि सकै ।।१।।
चाली कहैं जुटे तन मन से नेम टेम
को ठानि सकै ।।२।।
शांति दीन बनि धीरज धरि के शब्द में
सूरति सानि सकै ।।३।।
राम सिया की झाँकी सन्मुख सुर मुनि
को पहचान सकै ।।४।।
देखैं नैन सुनैं दोऊ काना, रसना से नहिं
जात बखाना ।।५।।
जिनके भरा हृदय अज्ञाना, ते करते
अपने मन माना ।।६।।
सब से नीच बना सो जाना, वा के
खुलिगे आँखी काना ।।७।।
चाली कहैं भयो मस्ताना, तन तजि
निज पुर कीन पयाना ।।८।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१० पद—परस्वारथ परमारथ दोउ दल,
बिना प्रेम के होत नहीं ॥१॥
चाली कहैं सत्य यह बानी,
सुर मुनि सब ने यही कही ॥२॥
पहिले नेम टेम से सुमिरौ,
प्रेम आय कर लिपटैगा ॥३॥
चाली कहैं देव मुनि भाखा,
काल मृत्यु नहिं झपटैगा ॥४॥
माया मृत्यु काल औ जम गण,
भक्त को देखि क डरते ॥५॥
चाली कहैं भक्त जो सच्चे,
कष्ट परैं नहिं टरते ॥६॥

११ पद—बिना परिश्रम नर तन विरथा भजन
कहाँ से होवै ॥१॥
चाली कहैं अन्त तन तजि कै कल्पन
नर्क में रोवै ॥२॥
चौरासी का चक्कर छूटै राम नाम
जपि लीजै ॥३॥
चाली कहैं सुलभ यह मारग मन काबू
करि लीजै ॥४॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१२ पद—नाम जपने का मजा पाये हैं हम ।।१।।
दुख सुख सम मान कै आये हैं हम ।।२।।
जिसकी रसना पर हर समय रट है
रामै नाम की
उनके चरणों को पकड़ि आये हैं हम ।।३।।
चाली कहैं तन छोड़ि कै साकेतपुर
आये हैं हम ।।४।।

१३ पद—हर जगह सब भक्त हैं,
और हर जगह भगवान हैं ।।१।।
चाली कहैं भगवान ही ने,
दीन हम को ज्ञान है ।।२।।
दीनता औ शान्ति बिन,
खुलते न आँखी कान हैं ।।३।।
कर्म शुभ कीन्हे बिना,
हटता नहीं अज्ञान है ।।४।।
पढ़ते सुनते लिखते हैं,
धरते नहीं कोई ध्यान हैं ।।५।।
सुर-मुनि की बानी मानकर,
जुट जाय तब कल्यान है ।।६।।

१४ पद—जपि राम नाम मन मारि गए,
जियते विधि लेख को टारि गए ।।१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जम काल मृत्यु सब हारि गए,
चाली कहैं तरिगे तारि गए ॥२॥
जे आलस नींद से हारि गए,
तिन को जम-दूत पछारि गए ॥३॥
गहि नरक कुण्ड में डारि गए,
चाली कहैं बिगड़ बिगाड़ गए ॥४॥

वार्तिक—साधू हो या गिरही, जिसके मन में द्वैत घुसा है उसकी गती नहीं होती है। उसमें दया धर्म नहीं है, प्रेत योनि या नर्क होता है। पापी की संगति करने वाले को पापी का आधा पाप उसे मिलता है। जब शरीर छूटता है तब उसे यमदूत नर्क ले जाते हैं। नाना प्रकार के कष्ट देते हैं, तब कौन सहायता करै, वहाँ तो बुद्धि भ्रष्ट है, सूझता नहीं है। मन मति से कुमति की संगति हो जाती है। यह नर-तन पर-उपकार और भगवान के भजन के लिए मिला है।

ब्राह्मन का शरीर सबसे उत्तम माना गया है। ऋषी मुनि कह गए हैं "जो पापी से भाषन करता है उसके ऊपर पाप का असर आ जाता है। वह जब अच्छे दस मनुष्यों से भाषन कर ले तो उसका पाप नाश हो। जिसके सामने से पापी निकले, वह जानता हो यह पापी है तो तीन बार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"राम-राम-राम" या "श्याम-श्याम-श्याम" या "नारायण-नारायण-नारायण" कह दे तो पाप उस पर असर न करैगा। यही उपाय इसका है। जो नहीं जानता उसे कुछ पाप न व्यापैगा"।

जो बड़ा पापी है उसको जै बार देखोगे तै गऊ मारने की तुम पर हत्या लगेगी। यदि तुम जानते हो। जो नहीं जानता उसे कुछ न व्यापैगा। ऋषी मुनी कह गए हैं "जहाँ पर बहुत लोग बैठे हैं उस पर दरी या कोई कपड़ा बिछा है, उस पर अपना बिछा कर बैठो। पापी-धर्मात्मा सब बैठे हैं, सबका असर तुम पर आता है। अपना वस्त्र बिछाने से तुम पर पापी का असर न आवैगा"।

ऋषी-मुनियों के वाक्य मानने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। जिनके दया धर्म नहीं है वे घोर पापी हैं। दूसरों को मारते-काटते उन्हें अच्छा लगता है। वही मरने पर यमदूत बनाए जाते हैं। यह उपदेश हमें शंकर भगवान और हनुमान जी ने दिया था। जब तक शरीर है तब तक दया-धर्म परउपकार करता रहे। व्यास जी ने यही बताया और सिद्ध संतों का भी यही मत है। कलियुग महाराज अपने परिवार नीच कौम को खूब भक्त बना रहे हैं। ऊँची कौम को नीचा दिखा रहे हैं। देखो ऐसे ही अपने परिवार की तरक्की सबको करनी चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खान-पान और प्राण का लोभ लगा है। इससे नीचे गिर जाते हैं। कर्म की गति कर्म करने से ही मिटती है। कौन कर्म ? निष्कपट होकर भगवान में लग जाय तब मिट जाय। जितने भक्त हुए हैं वे करनी करके हुए हैं। मनुष्य का अनमोल तन वृथा न जाय। कमर कस कर परउपकार में लग जाय। तुम जहाँ से आये हो वहाँ कैसे पहुँचोगे बिना शुभ कर्म किए। पढ़ते हो, सुनते हो और लिखते हो दूसरों को समझाते हो। वहाँ तिल-तिल का हिसाब लिखा जाता है फिर अपने मन का करते हो। जो तुम्हारे ऊपर मालिक है उससे नहीं डरते हो, मौत को भूले हो।

चाली ने विज्ञान दशा वालों पर कहा है। उनका बाल भाव हो जाता है। उनको गन्दा पानी, शुद्ध पानी ऐसा मालुम होता है। सबका झूठा शुद्ध भोजन के समान है। जो कुछ खिला दो खा लेंगे। उनको हानि नहीं करेगा। तुम्हारी हानि होगी। जो देखा-देखी ऐसा करते हैं उनकी गती नहीं होती। रोगी होकर मर जाते हैं। बहुत सिद्ध सन्त हैं जो आचार-विचार नहीं छोड़े। कोई आश्रम में पक्षी, कुत्ता, बन्दर, साधू, गिरही मरता है तो उस दिन सबको फलाहार दिया जाता है। उनसे कोई पूछता है तो कहते हैं अगर हम ऐसा न करें तो यह सब ऐसे ही झूठे सिद्ध बनेंगे। अन्त में नर्क होगा इससे ऐसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करते हैं। आप तरते औरों को तारते हैं उनकी भी ऊँची गती होती है। जो एक जीव को रास्ते पर लाता है। वह परम पद पाता है। उतने ही भजन से विज्ञान दशा हो जाती है। उतने ही भजन से लाखों का हिसाब बता देते हैं। ऐसी उनमें भगवान शक्ति दे देते हैं। इसमें दिमाग लगाना मूर्खता है। भगवान की लीला भगवान जाने। वे सर्वशक्तिमान हैं। राम, कृष्ण, विष्णु के सहस्र नाम हैं। जिस नाम से प्रेम हो उसी से मुक्ति-भक्ति-ज्ञान-विज्ञान प्राप्त हो जाता है। सिर्फ तन-मन प्रेम से लग जाय।

चालीदास का कीर्तन

तन समय श्वांस अनमोल मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥१॥
चाली कहैं गुरु से नाम मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥२॥
सबसे आसान यह मार्ग मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥३॥
तन छोड़ि सो राम क धाम मिला,
सिया राम भजो सिया राम भजो ॥४॥

१५ पद—बचन जो गुरु का है माना वही सियाराम का प्यारा ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहैं चाली सुनो भक्तों जियति ही तर
गया तारा ॥२॥
देव मुनि सब उसे चहते हेत का मुंह
किया कारा ॥३॥
दया उसके भरी उर में लोभ का करि
दिया छारा ॥४॥

शेर—जानै वही माने वही सुख जिसके आँखी कान है।
चाली कहें सुमिरन बिना हटता नहीं अज्ञान है।

१६ पद—महावीर बजरंग पवनसुत रामदूत हनुमान ॥
अंजनी पुत्र केशरी नन्दन विद्या बुद्धि निदान ॥
राम सिया सन्मुख में राजत सुनत नाम की तान ॥
चाली पर अस दाया कीनी मुक्ति-भक्ति
दियो दान ॥

१७ पद—सिया राम की सेवा के हित शंकर रूप
धरयो हनुमान ॥
एक रूप ते जग को देखत मुक्ति-भक्ति दे दान ॥
बीज मंत्र की धुनी सुनत औ अजर-अमर गुन
खान ॥
सिया राम सन्मुख में राजत जिनका रचा जहान ॥
ऐसा दानी देव न दूसर सुर मुनि कीन बखान ॥
चाली कहैं मिलै जेहि यह पद आवागमन नसान ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा—गरू से जाको भाव नहि, ताको जानो दुष्ट ।
चाली कह शुभ काम में, कैसे होवे पुष्ट ।।
अहंकार औ कपट संग, माया चोरन गुष्ट ।
चाली कह जियते नरक, मति वाकी है कुष्ट ।।
संगति जब अच्छी नहीं, बुद्धि गई है भ्रष्ट ।
चाली कह वै हर समय, बने रहत है नष्ट ।।
बुरे काम में खरचते, दया धर्म में रुष्ट ।
चाली कह नैनन लखा, ऐसे मन के चुष्ट ।।
मातु पिता को नर्क भा, मिली एसि औलादि ।
चाली कह धिक्कार है, दोनों कुल बर्बादि ।।
इनकी संगति जो करै, सीधे नर्क जाय ।
चाली कह तलफै गिरै, बार-बार गस खाय ।।

दोहा—रामकृष्ण औ विष्णु के, सहस नाम परमान ।
चाली कह जपि जानि लो, सबसे हो कल्यान ।।
भेद खेद को छोड़िए, या से होगा नर्क ।
चाली कह सुर मुनि बचन, या में नेक न फर्क ।।

शेर—दीनता औ शान्ति विन भगवान से तुम दूर हो ।
चाली कहैं थू थू तुम्है दोनों तरफ से कूर हो ।।

दोहा—दुष्ट की संगति जो करै, सो दुष्टै ह्वै जाय ।
चाली कह सुर मुनि बचन, चौरासी चकराय ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परस्वारथ परमार्थ विन, भव से होत न पार ।
बेद शास्त्र सुर मुनि बचन, चाली कहत सम्भार ।।

१८ पद—राम श्याम नारायण भजिये सीता राधा कमला ।
चाली कहै शान्त मन होवै चोर करै नहि हमला ।।
राम कृष्ण औ विष्णु को भजिए रमा राधिका सीता ।
चाली कहै चेतिए भक्तौं जीवन जात है बीता ।
राघौ केशव गोविन्द भजिए सीता कमला राधा ।
चाली कहैं देव मुनि बानी काटै कोटिन बाधा ।।
माघौ यदुपति रघुपति भजिये लछिमी राधे रामा ।
चाली कहैं मिले तब निज घर सुफल भयो नर चामा ।।

दोहा—दया धर्म हिरदय धरै दीन बने गहि शान्ति ।
चाली कह तेहि भक्त की छूटि जाय सब भ्रान्ति ।।

कीर्तन—रसना रट ले राधे श्याम राधे श्याम ।
चाली कहते सहस्रनाम सहस्रनाम सहस्रनाम ।।

१९ पद—क्रोध को जिसने है जीता वही सच्चा बहादुर है ।
कहै चाली सुनो भक्तौं वही मेरा बिरादर है ।।
जियति ही सब किया करतल दोऊ दिसि
उसका आदर है ।
देख मुनि वेद की बानी न मानै तौन कादर है ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शेर—निरादर उसका दोनों दिसि जो आलस नींद में
रहेता ।
कहैं चाली तजै तन जब तो जाकर नर्क में ढहेता ।।
सत्य का मार्ग जो गहेता वही सच्चा भगत जानो ।
कहैं चाली उसे जियतै मुक्ति औ भक्ति मा ज्ञानों ।।

दोहा—साँचा झूंठ क झूंठ मानता झूंठा झूंठ क साँच ।
चाली कहैं अन्त में जम गण आय के लेते टाँच ।।

छन्द—शुभ कारज करि लेव जियति में,
कर्म की भूमी बनी यही ।।
चाली कहैं पदारथ चारिउ,
इसी रीति से मिलत सही ।।

इति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु नानक देव जी

हम दो पाठ सुखमनी साहेब के करते थे। १८ की उम्र में ४ साल घूमे हैं। एक धोती, ४ लंगोटी, १ लोटा-डोर और १ सोटा रखते थे। किसी के दरवाजे नहीं जाते थे। जो पाती कड़ू न हो, या गूलर की गदिया खा लेते थे। चार-चार दिन पानी पीकर घूमते थे। बड़ा बल था। जाड़ा गर्मी कुछ न लगती थी।

पछाँह हरदोई जिला, गाँव बहादुर नगर के पच्छिम एक फरलाँग पर बाबा टीका दास, उदासी संत, सिद्ध पुरुष की कुटी थी। बाबा टीका दास वैश्य थे। ८५ वर्ष पर शरीर छोड़ा था। शंकर जी ने उनको भजन बताया था। ३० वर्ष की उमर में वे हनुमान जी को रोटी बनाकर खिलाये थे। उनका चरित्र बहुत ऊँचा है। उनकी जन्म-भूमि जिला गोरखपुर, गाँव चौरी चौरा है।

हम वहाँ गये और बातचीत हुई। उन्होंने कहा—"पैंतीस अच्छरी को मुंह बन्द करके जबान आगे नीचे के दाँतों में सटाकर, नाभी पर मन लगाकर उठाओ। इसे 'राज दन्ती' मुद्रा कहते हैं। गर्दन झुकी रहै। दो माह में नाभी का चक्र खुल गया। अश्नान करने के बाद अपने आप पाठ शुरू होकर बन्द हो जाता है"।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२८ की ऊम्र में अयोध्या जी आए। राम घाट पर राम किंकर दास जी की छावनी पुरानी मानी जाती है। वहाँ पर महाराज जी अनन्त श्री १००८ श्री बेनी माधो दास परमहंस देव जी मंदिर के पीछे एक कोठरी, १२ हाथ लम्बी ७ हाथ चौड़ी थी, उसी में रहते थे। जब हमें ६ माह बीत गये, तब पास ही बट का वृक्ष था, उसी के नीचे "गुरु नानक देव जी" प्रगट हो गये। गुलाब के फूल के रंग का शरीर था। खूब महकता था। सफेद धोती पहने थे, जैसी हमारे यहाँ जनेऊ में पहनाई जाती है। हमने दण्डवत किया, चरनोदक उतारा। महाराज जी तख्त पर बैठे ध्यान में मग्न थे। कुछ देर के बाद उनके गले से पेट तक एक चाँदी की पटरी प्रगट हो गई। उसमें काले-काले अक्षर पैंतीस अक्कखरी के खुदे थे। हमसे कहा इसे पढ़ो। हमने कहा "हम रोज इसका पाठ करते हैं"। कहा—"सुनाओ", हमने सुना दिया। उसमें दुर्गा मंत्र भी है :—

"ओं श्रीं ह्रीं क्लीं सुन्दरी बालायै नमः"

(१० माला रोज सुबह नहाकर पूरब मुंह बैठ कर जपे··· ··· ··· ··· ··· ··· ···)

बस पटरी उलट गई। अक्षर पेट की तरफ हो गये। हमसे कहा यह असतोत्र तुम्हारा सिद्धि हो गया। इसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र के जपने से गुरु गोविन्द सिंह जिनका जन्म पटना का था, तेग बहादुर के पुत्र थे, क्षत्री वंश के थे, मुसलमानों को परास्त किये थे। भगौती ने खाँडा, चक्र, किरपान दिया था। गुरु गोविन्द सिंह जी ने १० दिन खड़े-खड़े पूरब मुख करके यह "दुर्गा मंत्र" जपा था।

यह मंत्र सिद्ध हमने किया था। मन लगाकर १० माला करने से सब काम होता है।

१० दिन के बाद एक दोहा कहा, फिर अंतर हो गये। फिर थोड़े दिन बाद थोड़ा लिखवाया, फिर कुछ दिन बाद पूरा लिखवा दिया। जो बताते थे हमै याद हो जाता था।

दोहा—गोविन्द सिंह, गोविन्द भजि, गोमन ले जो जीति ।
ध्यान धुनी परकाश लय, रूप से होवै प्रीति ।।

श्री स्वामी राम मंगल दास
परमहंस देव जी महाराज
गोकुल निवास, अयोध्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी

दोहा—अर्द्ध चन्द ओंकार पर जानि लेय जो कोय ।
सत्य लोक को जाय, फिरि आवागमन न होय ।।
कंठ की जाप पिपीलिका, स्वाँसा की है मीन ।
सूरति जाप विहंग है, जानहिं परम प्रबीन ।।

पद—शब्द का भेद कछु बेद नहीं पायो,
कहत है सब साँच साँच ।
गुरुदेव से नाम की धुनी जानी,
तब हरि चरित्र फिर बाँच बाँच ।।
तीनोई गुनन के परे होय,
तब लगै कभी नहीं आँच आँच ।
मन रम्यो नाम औ रूप संग,
ठग स्थिर ह्वै गये पाँच पाँच ।।
प्रेम मगन छबि देखै तौन,
घन श्याम सखा सखी नाच नाच ।
मिटि जाय करम गति बिधि की लिखी,
जो मस्तक में दियो खाँच खाँच ।।
है सुरन को दुर्लभ नर शरीर,
कैसा सुन्दर यह ढाँच ढाँच ।
नानक बिरथा मानुष शरीर,
हरि भजन बिना जैसे काँच काँच ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा—बेद की गति बैकुण्ठ तक आगे गति कछु नाहिं ।
राम नाम गुरु से मिलै है सब के तन माहिं ॥
सुर मुनि संतन जो कही सो सब दीन लिखाय ।
वेद भेद पायो नहीं, साँची दीन बताय ॥
वेद त्रिगुन के परे नहिं, तीनों गुन परवीन ।
श्रीकृष्ण भगवान ने, गीता में कहि दीन ॥
मोक्ष जीव तब होत है, मिटै सबै संताप ।
एक अंश हरि भेजते, जग हितार्थ हित आप ॥
पाप ते महि गरुआय जब, तब आवैं वे अंश ।
जगत आय रक्षा करैं, होय दुःख विध्वंस ॥
फँसे नहीं वे जगत में, चले जाँय हरि पास ।
ऐसै खेल लगा रहै, कीजे मन विश्वास ॥
हरि की लीला अगम है, नाहिं न पारावार ।
सतगुर जो किरपा करै, नाम खुले सुखसार ॥
चारों मोक्षन का यही, हालि जानि तुम लेहु ।
राम नाम सुमिरन करहु, निज नैनन लखि लेहु ॥
भक्तन संग खेलत रहैं, राम आप ही खेल ।
संशय देय मिटाय सब, जो हवै जाय अकेल ॥
अकेल उसी को कहत हैं, नाम कि धुनि एक तार ।
तार कभी टूटे नहीं, काह करै संसार ॥
कोटिन के तब बीच में, बैठौ बोलौ खाव ।
विघ्न कोई व्यापै नहीं, राम नाम परभाव ॥
यह सिद्धान्त अपेल है, जानि लेहु गुरु पास ।
आँखी कान खुलैं तबै, होहु राम के दास ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजयोग या को कहत, सब योगन को मूल ।
याके बिन जाने, सुनो, मिटै न तन मन शूल ।।
छूटि जाय संकल्प सब, निर्विकल्प होय जाय ।
तब हरि के ढिग जाइहै, साँची दीन बताय ।।
संतन की संगति करै, तन मन प्रेम लगाय ।
राम कृपानिधि द्रवहिं, तब सतगुरु देहिं बताय ।।
सूरति शब्द के जाप को, सतगुरु देहिं बताय ।
रोम रोम से नाम धुनि, श्याम स्वरूप दिखाय ।।
अजपा या को कहत हैं, सूरति शब्द की जाप ।
जिह्वा चलै न कर हिलै, जपै आप को आप ।।
राम विष्णु औ कृष्ण जी, एकै हैं नहि दोय ।
नानक जे जन जानिगे, मुक्ति भक्ति लियो सोय ।।
कह नानक धनि संत वे, जिन कछु साधन कीन ।
तिन चरनन की रज भली, मुख औ सिर पर लीन ।।
साढ़े तीन कोटि तीरथ बसैं, चरनन में लेव जान ।
धोय के प्रेम से पीजिये, कह नानक हो ज्ञान ।।
संतन की महिमा अगम, को करि सकै बखान ।
नानक हर दम संग रहें जिनके कृपानिधान ।।

चौपाई—संतन के मन की हरि जानै ।
हरि की लीला संत बखानै ।।
संत सदा संग केलि करत हैं ।
हरि संतन का ध्यान धरत हैं ।।
हरि औ संत संग रहैं कैसे ।
जल औ जल-तरंग हैं जैसे ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोहा—हरि औ संत में भेदि नहिं, कह नानक सुनि लेव ।
तन मन मारो दीन ह्वै, जानि गूढ़ गति लेव ।।
सात कमल तन में अहैं, नाल एक ही जान ।
नानक कहि अभ्यास करि, देखैं चतुर सुजान ।।

चौपाई—कमल लाल रंग दल है चारी ।
बैठि गजानन सुरति सम्हारी ।।
गुदा चक्र का भेद बताया ।
करि के जतन जानि हम पाया ।।
कमल पीत रंग षट दल जानो ।
शक्ति सहित ब्रह्मा कर थानो ।।
इन्द्री चक्र का भेद बतायन ।
उत्पति यहँ से होत सुनायन ।।
नाभी इन्द्री मध्य बखानो ।
कुंडलिनि को यहँ पे जानो ।।
पूँछ को मुँह में बैठि दबाये ।
जब जागे तब सुख उपजाये ।।
श्याम रंग दल आठ सुहावन ।
विष्णु लक्ष्मी बास है पावन ।।
पालन करत सबन पर दाया ।
नाभि-चक्र का हाल सुनाया ।।
बारह दल रंग श्वेत कमल है ।
शिव गिरजा जहँ बैठि बिमल हैं ।।
हृदय चक्र का हाल यह भाई ।
जो देखा सो दीन बताई ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमल धूम रग सोरह दल जहँ ।
आतम इच्छा शक्ति रहत तहँ ।।
कण्ठ के चक्र का भेद है प्यारे ।
चलु आगे मिलिहैं सुख सारे ।।
कमल सहस दल बहु परकाशा ।
जोति निरंजन गिरिजा बासा ।।
दोहा—शेष सुकुल रंग सहस फन ऊपर छाया कीन ।
त्रिकुटी के नीचे अहै जानहिं परम प्रवीन ।।
चौपाई—दुई दल कमल रंग शशि केरा ।
रेफ बिन्दु को तापर डेरा ।।
दोहा—शिव ब्रह्मा विष्णु जपैं राम नाम यह जान ।
चमकै तेज अपार तहँ को करि सकै बखान ।।
चौपाई—त्रिकुटी चक्र कहत हैं या को ।
तिरगुण का फाटक है बाँको ।।
सूरति शब्द में जौन लगावै ।
सतगुरु किरपा ते खुलि जावै ।।
तीनों देव खुशी हों ताता ।
आशिष देंय जाव अब भ्राता ।।
दोहा—तिरबेनी अस्नान करि जब निर्मल ह्वै जाय ।
तब जोती के दरस हों गगन महल में जाय ।।
पद—गगन महल में रहस करत हैं,
राधे कृष्ण मुरारी जी ।
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राग रागिनी सखा सखी सँग,
मुरली बाजै प्यारी जी ।।
अनहद बाजा बरनि सकै को,
ताल सुरन गति न्यारी जी ।
नानक देखत ही बनि आवै,
कीजे ध्यान सम्हारी जी ।

दोहा—शून्य भवन में लय भई सुधि बुधि गई हेराय ।
किरपानिधि की कृपा ते, फिर आगे बढ़ि जाय ।।
भँवर गुफा या को कहत महा शून्य है नाम ।
जड़ समाधि तहँ होत है हठ-योगिन को धाम ।।
सत्यलोक के पास ही बना अहै गोलोक ।
कृष्ण के अन्तर राधिका गौवन का तहँ थोक ।।

चौपाई—बने बिचित्र भवन तहँ पावन ।
रंग रंग के वृक्ष सुहावन ।।
पुष्पन की सुगंध तहँ उडती ।
मधुर मधुर वायु जहँ चलती ।।
झूला झूलि रहै गिरधारी ।
कोटि काम छबि तन पर वारी ।।
राम ब्रह्म साकेत के बासी ।
जिन इच्छा करि सब परकासी ।।
पूरण सुख के हैं प्रभु रासी ।
चारौ मोक्षन के तहँ बासी ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बरनि सकै छबि वहँ की को है।
देखत ही बनि आवत जो है॥
अन्तर गत हैं आदि भवानी।
अगनित शक्ती जिन उपजानी॥

दोहा—हम को गुरु महराज ने दीन्हों भेद बताय।
जड समाधि में मन चपल सृष्टी रचत अघाय॥
या से या को मत सिखो, मानो बचन हमार।
राज योग को जान लो, मिलै तुम्हैं सुख सार॥
शून्य में सोऽहं रूप प्रभु, रहत लीजिये मान।
पवन में पवन जबै मिलै कैसे पावै जान॥
सत्यलोक से दयानिधि नाम को दीन पठाय।
त्रिकुटी पर आसन कियो, दुई दल कमल पै आय॥
एक अंश महा शून्य में, दूसर शून्य में जान।
गगन में तीसर जानिये, त्रिकुटी चौथा मान॥
त्रिकुटी से बहु अंश बनि, छिटकै तन में जाय।
धुनी उठत है नाम की, रोम-रोम हर्षाय॥

चौपाई—मध्य भाग पच्छिम दिशि सोहै,
तीनों नारायन मन मोहै।
धुनी ध्यान का खेल पसारैं,
शून्य समाधि सबै मिलि धारैं॥
आपै आप को जानन हारे,
आपै आप खेल बिस्तारे।
करि विश्वास श्री गुरु बानी,
निर्भय ह्वै भजु सारँगपानी॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छूटि जाय सब तन की काई,
हर शै में फिर वही दिखाई ।
जप अरु ध्यान सदा संग जानो,
अन्तराय होवै नहिं मानौ ।।
अकह अपार अगम यह बाता,
गुरु किरपा नानक कहैं ताता ।

दोहा—सतगुरु बचन में प्रीति हो अन्धकार हरि जाय ।
प्रेम दीनता उर बसे हर दम रूप दिखाय ।।

चौपाई—नाम रूप का खेल अपारा,
पालन उत्पति प्रलय क सारा ।
नाम से रूप बनत पल माहीं,
रूप से नाम कि सब परछाहीं ।
लीलाधाम बनत नहिं देरी,
नाम कि सब दिशि अहै उजेरी ।

पद—नाम रूप परकाश दशालय और न दूजा कोई जी ।
द्वैत भाव तन से जब छूटै, सूरति शब्द मिलोई जी ।।
अस्तुति निन्दा सम तव होवै, तन मन प्रेम भिजोई जी ।
नानक सतगुरु से जब जानै, मुक्ति भक्ति तब होई जी ।।

दोहा—बायें स्वर में शशि रहै, दाहिने सूर्य को जान ।
मध्य में सुखमन जानिये, तहँ पर शिव को थान ।।

चौपाई—प्रण का वास कण्ठ में जानो,
हृदय वास मनहि कर मानो ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब मन सूरति संग लग जाई,
तब आकाशवृत होत है भाई ॥
छबि देखै जब श्याम की प्यारी
प्रेम कि डोरि बँध्यो सुख भारी ॥

दोहा—शंख, चक्र, गदा, पदुम कर, मुरली धनुष औ बान ।
तीनों शक्तिन के सहित, सन्मुख कृपानिधान ॥
पन्द्रह बिधि की जाप को, गुर किरपा हम जान ।
कह नानक मानो सही, लय, समाधि अरु ध्यान ॥
नीचे ऊपर दन्त जो, समुहे पर हैं जान ।
जिह्वा तिन से साँटिये, मुख मूँदौ हो ज्ञान ॥
बेठि उन मुनी से तबै, सूरति शब्द लगाव ।
चन्द्र सूर्य जब एक हों, सुखमन घाट नहाव ॥
तिरबेनी स्नान भई, वहाँ खेचरी लागि ।
पाप पुण्य दोनों जरे, सबै कामना भागि ॥
हठ योगिन की खेचरी, तुम्हें देव बतलाय ।
जिह्वा उलटि के दशम में, कसि के देव लगाय ॥
महा शून्य के घाट पर महा खेचरी जान ।
भँवर गुफा पहुँच्यो जबै बन्द भई तब मान ॥
श्री गुरु शुकदेव जी मो पर किरपा कीन ।
रूप सदा सन्मुख रहै, सूरति शब्द में लीन ॥
मानुष का तन पाय कै, निशि दिन भज्यौ न राम ।
अगनित चक्कर काटिहैं, मिले नहीं विश्राम ॥
राम नाम सुमिरन करौ, तन मन प्रेम लगाय ।
नानक की यह विनय है, सब से शीश नवाय ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छूटि जाय सब तन की काई,
हर शै में फिर वही दिखाई ।
जप अरु ध्यान सदा संग जानो,
अन्तराय होवै नहिं मानौ ।।
अकह अपार अगम यह बाता,
गुरु किरपा नानक कहैं ताता ।

दोहा—सतगुरु बचन में प्रीति हो अन्धकार हरि जाय ।
प्रेम दीनता उर बसे हर दम रूप दिखाय ।।

चौपाई—नाम रूप का खेल अपारा,
पालन उत्पति प्रलय क सारा ।
नाम से रूप बनत पल माहीं,
रूप से नाम कि सब परछाहीं ।
लीलाधाम बनत नहिं देरी,
नाम कि सब दिशि अहै उजेरी ।

पद—नाम रूप परकाश दशालय और न दूजा कोई जी ।
द्वैत भाव तन से जब छूटै, सूरति शब्द मिलोई जी ।।
अस्तुति निन्दा सम तव होवै, तन मन प्रेम भिजोई जी ।
नानक सतगुरु से जब जानै, मुक्ति भक्ति तब होई जी ।।

दोहा—बायें स्वर में शशि रहै, दाहिने सूर्य को जान ।
मध्य में सुखमन जानिये, तहँ पर शिव को थान ।।

चौपाई—प्रण का वास कण्ठ में जानो,
हृदय वास मनहि कर मानो ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब मन सूरति संग लग जाई,
तब आकाशवृत होत है भाई ।।
छबि देखै जब श्याम की प्यारी
प्रेम कि डोरि बँध्यो सुख भारी ।।

दोहा—शंख, चक्र, गदा, पदुम कर, मुरली धनुष औ बान ।
तीनों शक्तिन के सहित, सन्मुख कृपानिधान ।।
पन्द्रह बिधि की जाप को, गुर किरपा हम जान ।
कह नानक मानो सही, लय, समाधि अरु ध्यान ।।
नीचे ऊपर दन्त जो, समुहे पर हैं जान ।
जिह्वा तिन से साँटिये, मुख मूँदौ हो ज्ञान ।।
बेठि उन मुनी से तबै, सूरति शब्द लगाव ।
चन्द्र सूर्य जब एक हों, सुखमन घाट नहाव ।।
तिरबेनी स्नान भई, वहाँ खेचरी लागि ।
पाप पुण्य दोनों जरे, सबै कामना भागि ।।
हठ योगिन की खेचरी, तुम्हें देव बतलाय ।
जिह्वा उलटि के दशम में, कसि के देव लगाय ।।
महा शून्य के घाट पर महा खेचरी जान ।
भँवर गुफा पहुँच्यो जबै बन्द भई तब मान ।।
श्री गुरु शुकदेव जी मो पर किरपा कीन ।
रूप सदा सन्मुख रहै, सूरति शब्द में लीन ।।
मानुष का तन पाय कै, निशि दिन भज्यौ न राम ।
अगनित चक्कर काटिहैं, मिले नहीं विश्राम ।।
राम नाम सुमिरन करौ, तन मन प्रेम लगाय ।
नानक की यह विनय है, सब से शीश नवाय ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पद—सब में, सब से परे है
स्वामी, रूप अहै नहि रूपम ।
अकथ अनादि कहैं सुर मुनि
सब, गावत चरित अनूपम ॥
अकह अपार अगम करुणामय,
भक्तन हित नर रूपम ।
नानक सरन सरन प्रभु तेरी,
चरु अरु अचर के भूपम ॥

दोहा—महा प्रकाश में रूप है, रूप में महा प्रकाश ।
नाम में महा प्रकाश है रूप में नाम का वास ॥
नाम रूप परकाश का देखा चाहे जो रंग ।
नानक हरदम हरि भजै रहै सदा ही संग ॥
गौर वर्ण शशि जानिये, श्याम वर्ण हैं भानु ।
पालन शशि ते होत है, उत्पति सूर्य से जानु ।

चौपाई—पिता विष्णु सम रवि को जानो,
लक्ष्मी माता सम शशि मानो ।
सुखमन मन को सुख उपजावै,
धुनी ध्यान लय में पहुँचावे ॥

दोहा—शशि ते थिर कारज बनैं, रवि से चर को जान ।
नानक हरि के भजन बिन मिलै न पद निर्वान ॥
सिद्धिन में परि के कहीं, मन प्रसन्न ह्वै जाय ।
पायन बेड़ी परि गई घूम घूम चकराय ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीखे कण्टक जानिये बचा रहे सो सूर ।
नानक गुरु परताप ते, राम कृपा भरपूर ॥

चौपाई—चारौं ध्यान देव बतलाई,
सुनि कै तन मन अति हर्षाई ।
प्रथम ध्यान करु नैनन बन्दा,
देखौ चरित सच्चिदानन्दा ॥
दूसर ध्यान खुले दोऊ नैना,
खेलैं हँसैं कहैं मृदु-बैना ।
तीसर ध्यान है सन्मुख झाँकी,
बरनि सकै को छबि अति बाँकी ॥
चौथा ध्यान दिव्य साकेता,
संत हंस संग कृपा-निकेता ।
चारौ ध्यान सिद्ध ह्वै जावै,
तब सब मुनि दरश दिखावै ॥
नाना खेल करें संग आई,
सो चरित नहिं बरनि सिराई ॥

दोहा—पाँच प्राण मिलि एक हों, तब पावो वह ठौर ।
कह नानक मेरे गुरु तत्व ज्ञान शिरमौर ॥
अपने में सबको लखै, सब में आप को मान ।
इस रहस्य के भेद को, नानक सो कछु जान ॥
नाद विन्दु में जब कोई ह्वै जावे सम्पन्न ।
वीर्य उर्ध्व होवै तबै, कह नानक सो धन्य ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौपाई—पदवी महा पुरुष की जानौ,
दरशन करत हरैं अघ मानौ ।

दोहा—नानक ऐसे संत जन, गुरु किरपा मिलि जाहिं ।
मानो हरि ही मिल गये भेद नहीं बिलगाहिं ।।
नानक ऐसे संत जन, करैं सदा उर वास ।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, तन मन रहे हुलास ।।
संतन की महिमा अगम, मेटि करम गति देहिं ।
बचन प्रभू टारे नहीं, पास आपने लेहिं ।।
संतन की संगति करै, आवागमन नसाय ।
कह नानक मानो बचन, दीन्हों भेद बताय ।।
गई पिपीलिका गगन तक, मीन समाधी कीन ।
सात स्वर्ग ऊपर विहँग, जाय के आसन लीन ।।
सूरति लागै शब्द पर, तन मन प्रेम से जान ।
नानक ता को प्राप्त हों, चारों विधि के ध्यान ।।

श्री गुरु देवाय नमः

श्री नानक देवाय नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh